Dr. Sunil Kr. Saha
Assistant Professor
Depart
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-I (H)
Paper-I
Date-05-12-20
~~Lecture No.-08~~
Lecture No.-09

(C) स्मृति विस्तार (Memory span)- स्मृति विस्तार का कम या अधिक होना वाचिक अधिगम को प्रभावित करता है. कम स्मृति विस्तार होने पर वाचिक अधिगम अपेक्षाकृत विलम्ब से होता है. मिलर ने ज्ञात किया कि एक प्रौढ़ व्यक्ति का तत्कालिक स्मृति विस्तार 7±2 वाचिक इकाई होता है.

(D) अधिगम सामग्री की वरीयता (Preference of learning Meterial)- व्यक्ति जिस प्रकार की अधिगम उतना ही सरलता से कर लेता है.

(E) संवेगिकता तथा उद्दोलन (Affectivity and Aroual)- सामान्य शब्दों की तुलना में संवेगिक स्थिति उत्पन्न करने वाले शब्दों के उपस्थित में पुनः स्मरण या अधिगम की मात्रा बढ़ जाती है. इस संबंध में कलीनास्मिथ तथा कैपलान (1963) में अध्ययन किये.

(F) प्रेरणा (Motivation)- अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि प्रेरणा अधिगम को अपेक्षाकृत कम प्रभावित हुआ है.

वाचिक अधिगम के प्रमुख गोचर (Main phenomenum of verbal Learning)-

(1) क्रमिक स्थिति वक्र (Serial learning Method)- इसके अंतर्गत प्रयोज्य सूची के पदों को उनकी स्थिति के आधार पर सीखता है. क्रमिक स्थिति वक्र प्रयोज्य से मुक्त तथा क्रमिक पुनः स्मरण कराने पर प्राप्त होता है. डीज (1968) ने अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकाला कि क्रमिक पूर्वाभास विधि द्वारा वाचिक अधिगम करने पर सूची के मध्य में स्थित

पदों का अधिगम कठिन होता है. तथा अन्त के पदों का पुनः स्मरण उससे कम होता है. मर्डाक में भी इसी संदर्भ में प्रायोगिक अध्ययन (1962) किए.

(2.) गुच्छन (clustering) - जब किसी ऐसी वाचिक सामग्री का अधिगम किया जाए. जिसमें शब्द किसी भी प्रकार आपस में सम्बद्ध हैं. पर वे सूची में दूर होने पर भी एक-दूसरे के साथ-साथ दुहराये जाते हैं, तो इस प्रकार शब्दों को एक-साथ दुहराने की प्रक्रिया गुच्छन कहलाती है, बॉसफील्ड (1963) ने गुच्छन (clustering) व्यापार का पता लगाया. जिसमें उनके श्रेणी गुच्छन कहा, साहचर्यात्मक गुच्छन, गुच्छन (category cluste... का दूसरा रूप है, गुच्छन प्रवृत्ति का प्रवर्तक बॉसफील्ड (Bousfield) है.

कूट संकेतन (coding) - निरर्थक पदों का वाचिक अधिगम किस प्रकार होता है, इस सम्बन्ध में कई अध्ययन हुए, जिसमें कई तथ्य सामने आए, जिसमें एक यह तथ्य में था कि प्रयोज्य निरर्थक पदों का कूट संकेतन परिचित पदों ने प्रायोगिक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला, कि निरर्थक पदों को दूसरे शब्दों में कूट संकेतन करता है।

वाचिक अधिगम की सैद्धान्तिक व्याख्या (Theoretica... interpretation of verbal learning) -

वाचिक अध्ययन तथा अनुबंधन दोनों एक ही नियम के आधार पर स्थापित होते हैं. जिसमें प्रायोज्य अपनी प्रक्रिया संशोधित कर ले. इस प्रकार उद्दीपन अनुक्रिया के बीच साहचर्य स्थापित हो जाता है, उद्दीपन पद तथा अनुक्रिया पद एक-दूसरे के समीप हो जाता है। जिसके कारण वाचिक अधिगम में समीपता का नियम कार्य करता है।. स्पीयर एकेरसॉण्ड (1969) के अनुसार वाचिक अधिगम में पुनर्बलन आवश्यक नहीं है